

डॉ. ब्रूस वाल्टके, भजन, व्याख्यान 12

© 2024 ब्रूस वाल्टके और टेड हिल्लेब्रांट

यह भजन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. ब्रूस वाल्टके हैं। यह सत्र संख्या 12 है, याचिका स्तोत्र, विलाप, शत्रु और रूपांकन।

हम ऐतिहासिक दृष्टिकोण से स्तोत्रों के विभिन्न दृष्टिकोण सीख रहे हैं और हम आलोचनात्मक दृष्टिकोण के रूप में हैं।

हमने देखा कि भजन तीन प्रमुख प्रकार के होते हैं। इसमें भजन, सामान्य रूप से ईश्वर की स्तुति, स्तुति के कृतज्ञ गीत और प्रार्थना स्तोत्र हैं। एक पूर्व भजन है जिस पर गुंकेल ने चर्चा नहीं की, मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है और मोविनकेल ने इसे अपनाया है और वह निर्देश भजन है जिसे संपादकों ने समय-समय पर एक भजन में प्रस्तुत किया है जो प्रभु के कानून का पालन करने के लिए प्रेरित करता है।

उन्होंने प्रस्तावना के रूप में पहला स्तोत्र प्रस्तुत किया कि यह स्तोत्र उनके लिए है, यह पुस्तक उनके लिए है जो ईश्वर के वचन पर ध्यान करते हैं। तो, वास्तव में एक और प्रकार है और वह है निर्देशात्मक स्तोत्र। तो, मेरे विचार से, भजन वास्तव में चार प्रकार के होते हैं।

इसमें स्तुति स्तोत्र हैं, विशिष्ट कृत्यों के लिए कृतज्ञ स्तुति है, याचना स्तोत्र हैं, और निर्देश स्तोत्र हैं। क्रॉनिकलर ने निर्देशात्मक भजनों का उल्लेख नहीं किया है और यह भी हो सकता है कि उन्हें बाद में जोड़ा गया हो। मुझे नहीं पता।

यह कोरी अटकल है। तो, हमने एक प्रमुख प्रकार के बारे में बात की और वह है भजन। हमने अभी-अभी एक भजन, भजन 92, जो कृतज्ञतापूर्ण प्रशंसा का एक भजन है, का भी वर्णन किया है।

अब हम आपके नोट्स के पृष्ठ 130 पर हैं। यह आपके पाठ्यक्रम का एक बड़ा भाग है। मुझे वास्तव में सात-लीग जूते पहनकर गुजरना होगा, क्योंकि यहां सामग्री की गड़बड़ी है।

मूल रूप से, मैंने जो किया है वह यह है कि गंकेल इतने विस्तार का जर्मन विद्वान है, मैंने बस उसके बहुत सारे काम को स्कैन किया है और यह आपको भजनों के बारे में बहुत अधिक विवरण देगा। लेकिन मुझे लगता है कि जिस पाठ्यक्रम में आप भजनों का परिचय दे रहे हैं, उसमें यह महत्वपूर्ण है कि आपको एक व्यापक दृष्टिकोण मिले। आपको भजनों का स्वाद मिलता है।

मुझे लगता है कि भजन आपको स्तोत्र के भीतर उस शैली का अच्छा स्वाद देते हैं। स्तोत्रों में प्रार्थनाएँ प्रमुख ध्वनि हैं। मैं गुंकेल से जो करता हूँ, मैं बस इन सभी भजनों को सूचीबद्ध करता हूँ।

फिर मैंने उनके बारे में सोचने की कोशिश की। मूलतः, मैं आपको मूल रूप से गुंकल का विस्तृत कार्य दे रहा हूँ। मैं बस आपके साथ इसे सरसरी तौर पर पार कर सकता हूँ।

याचिका स्तोत्रों पर यह व्याख्यान, मैंने इसे तीन मुख्य खंडों में विभाजित किया है। पहला भाग एक है, जो एक परिचय है, जिसमें अधिकांश बुनियादी सामग्री शामिल है। पृष्ठ 162 पर भाग दो, मैं याचिका स्तोत्र के भीतर एक बड़ी समस्या उठाता हूँ।

यही वह समस्या है जहाँ भजनहार प्रार्थना करता है कि ईश्वर शत्रु को दण्ड देगा। इन्हें उपदेशात्मक स्तोत्र कहा जाता है। वे दूसरा गाल आगे करने की यीशु की शिक्षा से असंगत हैं।

वे परमेश्वर से दुष्टों पर न्याय करने के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। आपको वह नये नियम में नहीं मिलता। मैं इसके बारे में और अधिक बताऊंगा।

कई ईसाई लोगों के लिए यह समस्याग्रस्त है कि भजनहार कहे, भगवान उनके दांत काटता है, उनके बच्चों को ले जाता है और उन्हें चट्टानों पर पटक देता है, इत्यादि। ईसाई उससे पीछे हट जाते हैं। यह एक ऐसा मुद्दा है जिस पर ध्यान देने की जरूरत है और मैं इसका समाधान करने जा रहा हूँ।

वह पृष्ठ 162, भाग दो, निहितार्थ स्तोत्र पर है। मैंने उसे एक विशिष्ट अनुभाग दिया है। काश मैंने अध्याय के अंत में एक तीसरा खंड जोड़ा होता, जो भजनों के धर्मशास्त्र पर होता।

मैंने याचिका स्तोत्रों के धर्मशास्त्र को छुआ। मैं भाग तीन के अंत में संक्षेप में बताना चाहता हूँ, जो आपके नोट्स में नहीं है, बस धर्मशास्त्र के बारे में कुछ मौलिक विचार हैं जिन्हें हम याचिका स्तोत्रों से प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन अब, सबसे पहले, कुछ परिचयात्मक बातें।

सबसे पहले, यह बात है कि आप इस शैली को कैसे देखते हैं? इसका नाम क्या है? फिर मैं वास्तव में अंक 2 के व्यक्तिगत विलाप गीतों को देखने जा रहा हूँ। गुंकल का उपयोग करने के बाद मैंने उसकी तुलना एक फूल लेने और उसे तोड़ देने से की। आप एक वनस्पति विज्ञानी की तरह हैं जो सभी विवरणों को देख रहा है और इस प्रक्रिया में, आप फूल खो देते हैं। लेकिन शायद जब हम पुंकेसर और पत्तियों और जड़ों और सब कुछ को समझ लेंगे, तो हम फूल के लिए बेहतर सराहना प्राप्त करेंगे।

तो, मुझे ऐसा लगता है कि हम यह कर रहे हैं। हम बस पूरी चीज़ को छिन्न-भिन्न कर रहे हैं और अब हमारे पास फूल की सुगंध या फूल की सुंदरता नहीं रह गई है। लेकिन हम इसे रख देंगे, उम्मीद है कि आप इसे फिर से एक साथ रखेंगे और इसकी खुशबू का आनंद लेंगे।

लेकिन अब हम पृष्ठ 140 पर व्यक्तिगत विलाप के बाद जा रहे हैं। मैंने सांप्रदायिक विलाप के बारे में संक्षेप में बात की जहां पूरा देश कठिनाई में है। व्यक्ति और समुदाय के बीच एक मिश्रण है।

गुंकल ने इसे मिश्रित कहा। उसे यह समझने में परेशानी हुई। ऐसा इसलिए है क्योंकि उसे शाही व्याख्या समझ में नहीं आई।

यदि आप समझते हैं कि मैं राजा हूँ, तो आप हम और लोगों के मिश्रण को समझ सकते हैं क्योंकि वे एक-दूसरे के साथ कॉर्पोरेट एकजुटता में हैं। लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जो केवल सामुदायिक विलाप हैं और वह पृष्ठ 140 पर हैं। याचिका स्तोत्रों का एक प्रमुख उद्देश्य शत्रु का उल्लेख है।

और इसलिए, मैंने सोचा कि पृष्ठ 141 पर शत्रु का उल्लेख करना उचित होगा। और आप पृष्ठ के शीर्ष पर रोमन अंक चार देखते हैं। इसलिए, जब हमारे पास नामकरण हो गया और हमारे पास रोमन अंक दो है, व्यक्तिगत विलाप, सामुदायिक विलाप, तो मैंने सोचा कि दुश्मन पर एक पूरा खंड रखना उचित है।

तो वह रोमन अंक चार है। और फिर अंततः पृष्ठ 145 पर, मैं याचिका स्तोत्र के उद्देश्यों पर चर्चा करता हूँ। यह वैसा ही है जैसे स्तुति स्तोत्रों में स्तुति का आह्वान और स्तुति का कारण होता है।

और फिर आमतौर पर प्रशंसा के लिए नए सिरे से आह्वान किया जाता है, यही उनका उद्देश्य है। भाग के इस वानस्पतिक विश्लेषण में याचिका स्तोत्रों के भी विशिष्ट तत्व हैं, लेकिन उनका एक पता है। उनके पास एक विलाप है, उनके पास एक प्रार्थना है और उनके अंत में उनकी प्रशंसा है।

और वे सभी विचार करने लायक हैं। और इसलिए, हम याचिका स्तोत्रों के उद्देश्यों पर विचार करेंगे। तो यहीं हम व्यक्तिगत विलाप भजनों के साथ जा रहे हैं।

हम देखने जा रहे हैं, ठीक है, इस अध्याय में, हम सबसे पहले, व्यक्तिगत विलाप भजनों को देखेंगे, फिर सांप्रदायिक, फिर हम दुश्मन पर विचार करेंगे और फिर हम रूपांकनों पर विचार करेंगे। तो ये व्यापक विचार हैं और हम शायद मूल में खो जाएंगे, लेकिन यहां बहुत अधिक विवरण है। लेकिन उम्मीद है, हम अपना सिर पानी के ऊपर रखेंगे और मैं उसमें से हम सभी को सांस लेने में सक्षम बना सकूंगा।

इस बिंदु पर हम साल्टर में गहरी डुबकी लगाने वाले हैं। ठीक है। व्यक्तिगत विलाप के तहत, हम जो स्थापित करने जा रहे हैं, और चर्चा कर रहे हैं वह सबसे पहले, बहुत जल्दी, भजन, पहचान, पूंजी ए, पहचान भजन की पहचान के लिए है।

हम किस स्तोत्र की बात कर रहे हैं? दूसरा प्रश्न जो हम संबोधित करने जा रहे हैं, वह गुंकेल का है कि वह व्यक्ति कौन है?। और उनके समय में, यह सोचा जाता था कि। एक व्यक्ति नहीं था, बल्कि यह एक संपूर्ण समुदाय था जो खुद को एक व्यक्ति नहीं बल्कि। के रूप में संदर्भित करता था। तो हमारे पास बी पर, व्यक्ति की पहचान है। फिर पृष्ठ 31 पर, हम जीवन सेटिंग के बारे में बात करने जा रहे हैं।

ये स्तोत्र कहाँ से उत्पन्न हुए हैं? और वह पृष्ठ 131 पर होगा। सी. तो हमारे पास नामकरण होने और हमारी पहचान होने के बाद, या हमारे पास भजनों की पहचान होने के बाद, मैं की पहचान होने के बाद, हम विभिन्न जीवन सेटिंग्स पर चर्चा करते हैं जिनसे वे उभरते हैं। हम इसके बारे में बात करेंगे, कुछ आठ अलग-अलग सेटिंग्स जो हमें मिलती हैं।

तो यह एक तरह से व्यक्तिगत विलाप की रूपरेखा है। यह हमें सांप्रदायिक विलाप के साथ पृष्ठ 140 तक ले जाएगा। मुझे लगता है कि यह पृष्ठ 140 था।

तो सबसे पहले बात करते हैं कि हम किस भजन की बात कर रहे हैं? कुछ, लगभग 50 स्तोत्र, स्तोत्र का एक तिहाई हैं। वैसे, तीसरे के बारे में, मुझे लगता है कि उनमें से 47 ने दुश्मन का उल्लेख किया है। तो, आप उनमें से केवल तीन को देख सकते थे, जिनमें से एक भजन 4 था, जिसमें दुश्मन का उल्लेख नहीं था।

यह एक अलग तरह का संकट था. संकट कोई शत्रु नहीं था. जैसा कि हमने देखा, संकट सूखे का था।

इसलिए, मुझे लगता है कि यह ध्यान देने लायक है कि यह एक बड़ी संख्या है। इसलिए, मैं विलाप या याचिका लिखता हूं। ओह, सबसे पहले, नामकरण।

याद रखें मैंने कहा था कि पाँच तत्व थे संबोधन, शिकायत या विलाप, याचिका और अंत में प्रशंसा। इसलिए, इसका नाम इन सभी भजनों में मौजूद इन रूपांकनों में से एक के नाम पर रखा जा सकता है। वास्तव में विलाप को किसी स्थिति पर वास्तव में विलाप करने के बीच विभाजित किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए, अपने पाप पर विलाप करना, एक प्रायश्चित स्तोत्र बनाम एक शिकायत जिसका आप विरोध कर रहे हैं। इ बात ठीक नै अछि। यह अन्याय है.

तो यह एक विलाप से आगे निकल जाता है, लेकिन यह एक शिकायत है। इसलिए, उन्हें कभी-कभी विलाप स्तोत्र कहा जाता है, कभी-कभी शिकायत स्तोत्र और निरंतर मूल भाव कहा जाता है। तो, इस प्रकार के भजन में पाए जाने वाले इन विभिन्न रूपांकनों के कारण आपके पास इस प्रकार की भिन्न शब्दावली है।

खैर, मुझे लगता है कि साहित्य इस पर विलाप या शिकायत और याचिका दोनों तरह से चलता है। इसलिए, मैं पा सकता हूं, आप मुझे इस समय जो महसूस कर रहा हूं उसके अनुसार अपने आसपास बदलता हुआ पा सकते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि मैंने इसे शीर्षक याचिका भजन दिया है।

तो, आपके पास स्तुति स्तोत्र और प्रार्थना स्तोत्र हैं। लेकिन फिर रोमन अंक दो, व्यक्तिगत विलाप, और उसके नीचे ए पहचान है और जो भजन का प्रमुख प्रकार है जो हमारे पास स्तोत्र में है। यह भजन की सबसे बड़ी शैली है।

यह 150 में से लगभग 50 है। मैंने पिछले घंटे में आरडब्ल्यूएल मोबली के हवाले से इस पर एक टिप्पणी की थी। उन्होंने कहा कि, उद्धरण, इज़राइल की प्रार्थनाओं के केंद्र में विलाप की प्रधानता का मतलब है कि जो समस्याएं विलाप को जन्म देती हैं, वे कोई सीमांत या असामान्य नहीं हैं, बल्कि विश्वास के जीवन के लिए केंद्रीय हैं।

इसके अलावा, वे दिखाते हैं कि आस्था के जीवन में पीड़ा और उलझन का अनुभव कम आस्था का संकेत नहीं है, कुछ ऐसा है जिसे बढ़ा दिया जाना चाहिए या किसी के पीछे छोड़ दिया जाना चाहिए, बल्कि यह आस्था की प्रकृति में अंतर्निहित है। इसलिए, जीवन की कठिनाइयाँ और संकट हमारे विश्वास के केंद्र में हैं। यह हमारे संकट में ईश्वर की विजय है।

यहीं पर मैं इस धारणा पर चर्चा करता हूँ जिस पर हमने कल चर्चा की थी, कि यह नितांत आवश्यक है कि पुण्य और उसके पुरस्कारों के बीच अंतर हो। क्योंकि यदि ईश्वर हमारे पुण्यों का तुरंत प्रतिफल दे, तो हम ईश्वर का उपयोग करेंगे। हम उसकी पूजा करेंगे, इसलिए नहीं कि वह कौन है, बल्कि केवल अपनी आत्म-संतुष्टि के लिए।

हम उसके सेवक न होकर, हमारे सेवक बन जायेंगे। इसी प्रकार हम ईश्वर का उपयोग करेंगे। मुझे लगता है कि इस पर कुछ समय के लिए रुकना उचित है क्योंकि मूसा इसराइल के लोगों के साथ इस बात पर विचार कर रहे हैं कि उनकी समृद्धि उनके आध्यात्मिक जीवन की घृणित दुश्मन है।

जैसा कि एगोर ने कहा, मुझे बहुत अधिक मत दो। क्योंकि यदि मेरे पास बहुत कुछ है, तो मैं कहूँगा, प्रभु कौन है? मुझे अब उसकी जरूरत नहीं है। जब हमें आवश्यकता होती है और संकट होता है तब हमें ईश्वर की आवश्यकता होती है।

यह अंतर हमें पूजा और नैतिकता को आनंद के साथ भ्रमित न करने में सक्षम बनाता है। क्योंकि अन्यथा, अगर उसने हमें तुरंत इनाम दिया, तो यह सब हमारी खुशी के लिए होगा, न कि हमारे आध्यात्मिक लाभ के लिए। तो, व्यवस्थाविवरण अध्याय आठ पर एक नज़र डालें, जहां भगवान को सिखाया जाता है, हमें एक उदाहरण दिया जाता है कि वह हमारे साथ कैसे व्यवहार करता है।

वह श्लोक आठ में, अध्याय आठ के श्लोक एक में कहता है, आज मैं तुम्हें जो भी आदेश दे रहा हूँ, उसका पालन करने में सावधान रहना, ताकि तुम जीवित रहो और बढ़ो, और उस देश में प्रवेश करो और उसके अधिकारी हो जाओ, जिसे यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाकर कहा है। अब स्मरण करो कि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर उन 40 वर्षों तक जंगल में किस प्रकार तुम्हारी अगुवाई करता रहा। उसने आपको विनम्र बनाने के लिए, आपको उस पर निर्भर बनाने के लिए और आत्मनिर्भर नहीं बनाने के लिए ऐसा किया।

उसने आपको विनम्र करने और आपकी परीक्षा लेने के लिए, यह जानने के लिए कि आप वास्तव में क्या हैं, आपकी परीक्षा करने के लिए ऐसा किया ताकि यह जान सके कि आपके हृदय में क्या है, कि आप उसकी आज्ञाओं का पालन करेंगे या नहीं। उसने तुम्हें नम्र किया, तुम्हें भूखा रखा और फिर तुम्हें मन्ना खिलाया। यह कुछ अनोखा था।

आप परंपराओं की ओर वापस नहीं जा सकते। यह आपका अपना अनुभव था, जिसे न तो आप और न ही आपके पूर्वज जानते थे। आपको यह सिखाने के लिए कि मनुष्य केवल रोटी पर नहीं, बल्कि प्रभु के मुख से निकलने वाले हर शब्द पर जीवित रहता है।

इस प्रकार उस ने तुम्हें नम्र किया, उस जंगल में जहां अभाव था, तुम्हारी परीक्षा ली। तो, आप भगवान पर निर्भर रहना सीखेंगे। इसका अर्थ है ईश्वर की आज्ञा का पालन करना और उसके वचन पर निर्भर रहना और उसके वचन के अनुसार जीना।

वह लोगों को चेतावनी देते हैं कि समृद्धि उनके जीवन की घातक दुश्मन हो सकती है। पद 10 में, जब तुम खाओ और तृप्त हो जाओ, तो उस अच्छी भूमि के लिए जो उसने तुम्हें दी है, अपने परमेश्वर यहोवा की स्तुति करो। सावधान रहो, यही वह समय है जब तुम सफल होगे, और यह न भूलोगे कि तुम यहोवा अपने परमेश्वर की आज्ञाओं, विधियों, और उपाधियों का, जो मैं आज तुम्हें देता हूँ, पालन नहीं करते।

यह हमारी भ्रष्टता है। अन्यथा, जब तुम खाओगे और तृप्त हो जाओगे, जब तुम अच्छे घर बनाओगे और बस जाओगे, और जब तुम्हारे गाय-बैल और भेड़-बकरियां बढ़ जाएंगी, और तुम्हारी चांदी और सोना बहुत बढ़ जाएगा, और तुम्हारा सब कुछ बढ़ जाएगा, तब तुम्हारा मन घमण्डित हो जाएगा और तुम भूल जाओगे। प्रभु तुम्हारा परमेश्वर जो तुम्हें दासत्व के देश अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया। वह तुम्हें विशाल और भयानक जंगल में, विषैले साँपों और बिच्छुओं वाली उस प्यासी, जलविहीन भूमि में ले गया।

वह तुम्हें चट्टान से बाहर ले आया। उस ने तुम्हें जंगल में खाने के लिये मन्ना दिया, जिसे तुम्हारे पुरखाओं ने कभी न जाना था, कि तुम को नम्र करो, और परखो, कि अन्त में तुम्हारा भला हो। यहीं खतरा है।

आप अपने आप से कह सकते हैं, मेरी शक्ति और मेरे हाथों की ताकत ने मेरे लिए यह धन उत्पन्न किया है। परन्तु अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण रखो, क्योंकि वही तुम्हें धन उत्पन्न करने की सामर्थ्य देता है। इस प्रकार उसकी वह वाचा पक्की होती है, जो उस ने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाकर खाई थी, जो आज भी प्रगट है।

यह एक खतरा है कि हम ईश्वर को भूल जायेंगे और हम आत्मविश्वासी और आत्मविश्वासी हो जायेंगे। और जैसा कि मैं कहता हूँ, हम अपनी खुशी के लिए भगवान का उपयोग करेंगे। इसलिए, एक अंतराल है जहां हमें अपने चरित्र का निर्माण करने के लिए कष्ट सहना होगा।

इसलिए, मैं पृष्ठ 130 पर लिखता हूँ, कि आध्यात्मिक जीवन के लिए पुण्य और उसके प्रतिफल के बीच का अंतर आवश्यक है। प्रार्थनाओं का तुरंत उत्तर मिलने से, याचिकाकर्ता आनंद को नैतिकता के साथ मिला देगा। हम सद्गुण और उसके पुरस्कारों को सीमित करके स्वार्थवश ईश्वर का उपयोग करेंगे, और आध्यात्मिक जीवन विकसित होगा।

यहाँ पॉल है, इससे भी अधिक, हम अपने कष्टों में आनन्दित होते हैं, यह जानते हुए कि कष्ट सहनशक्ति पैदा करते हैं और सहनशीलता चरित्र पैदा करती है, और चरित्र आशा पैदा करता है। आशा हमें लज्जित नहीं करती क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में डाला गया है। तो, यह ईश्वर द्वारा हमें बचाने का एक तरीका है क्योंकि हम मुड़ते हैं और उस पर निर्भर रहना सीखते हैं।

मेरा यह सुझाव भजन संहिता की पुस्तक के मूल में है। इन सभी भजनों में, वे प्रशंसा में विजयी होते हैं। जैसा कि हम देखेंगे, वे प्रशंसा के बिना कभी विलाप नहीं करते।

यह हमेशा इस संदर्भ में होता है कि हम अपने ईश्वर को जानते हैं। अय्यूब के साथ यही अंतर है। अय्यूब ने बिना किसी स्तुति के परमेश्वर से शिकायत की।

उसने बस भगवान में दोष पाया और भगवान अप्रसन्न हुए और उसे डांटा। अंत में, अय्यूब को उत्तर देने के लिए परमेश्वर को कटघरे में खड़ा करने के अपने घमंड पर पश्चाताप करना पड़ा। तो, एक बड़ा अंतर है।

तो, दूसरे शब्दों में, हम जो सीख रहे हैं वह यह है कि शिकायत मानक है और यहां तक कि विरोध भी मानक है, लेकिन हमेशा स्तुति के साथ भगवान को प्रसन्न करना चाहिए, उस पर विश्वास कभी नहीं खोना चाहिए, आश्वस्त रहना चाहिए कि वह हमारे माध्यम से अच्छा काम कर रहा है। यह सब। वह विश्वास लेता है। विश्वास के बिना ईश्वर को प्रसन्न करना असंभव है।

तो, यह हमारे आध्यात्मिक जीवन का विकास करता है। वह ए है। बी, आई की पहचान, यहां मुद्दा स्पष्ट रूप से है, अब गुंकेल यह नहीं समझते हैं कि आई अक्सर राजा है, लेकिन वह दृढ़ता से तर्क देते हैं कि यह एक व्यक्ति है। वह लिखते हैं कि यह सबसे गंभीर गलती थी जो आम तौर पर कुछ शोधों द्वारा की जा सकती थी जब उन्होंने ऐसी जीवंत व्यक्तिगत कविता को पूरी तरह से गलत समझा और सार्वभौमिक रूप से शिकायती गीतों को समुदाय से जोड़ा।

बिना समझे यह व्यक्ति विशेष को संदर्भित करता है। वह अपने समय के शिक्षा जगत को संबोधित कर रहे हैं। उनका कहना है कि यह बहुत स्वाभाविक है।

यह स्वयं-स्पष्ट भी है। और पृष्ठ 131 पर, यह अन्य धर्मों और अन्य काव्यों में सत्य है। सुपरस्क्रिप्ट में, यह एक शिकायती गीत है, उदाहरण के लिए, जब किसी को तिरस्कृत किया जाता है और वह अपनी चिंता व्यक्त करता है तो 102 लोग पीड़ित होते हैं।

स्पीकर डी को अक्सर बाकी समुदाय से अलग किया जाता है। उदाहरण के लिए, आपने मेरे दोस्तों को मुझसे दूर कर दिया है। और फिर वह डेटा देता है।

उनका कहना है कि यह राजा ही भजन 18 इत्यादि में स्पष्ट रूप से बोल रहा है। तो यह मैं है। मैं, जो गायब है वह राजा है। फिर यह हमें उस जीवन परिवेश की ओर ले जाता है जहाँ से वे उत्पन्न हुए थे और वे स्वयं को किस प्रकार की परेशानी पाते हैं? कुछ भजन मंदिर के लिए लिखे गए थे।

हम इसे पृष्ठ 132 पर देखेंगे। और कुछ भजन मंदिर से कुछ दूरी पर लिखे और रचे गए थे। वे सभी तुरंत मंदिर के लिए नहीं बनाये गये थे।

वे सभी मंदिर में उपयोग के लिए आये थे, लेकिन वे मंदिर से काफी दूर बनाये गये थे। यहाँ तक कि शत्रु भी पवित्र स्थान से दूर हो जाते हैं। तो मंदिर पृष्ठ 132 पर है और मंदिर से कुछ दूरी पर पृष्ठ 132 पर है।

कुछ भजन, आप वहाँ संख्या तीन को अभयारण्य से काफी दूरी पर गाते हुए देख सकते हैं। और फिर दुश्मन कभी-कभी तत्काल क्षेत्र से बहुत दूर हो जाते हैं। नंबर चार, अभयारण्य से हटाए गए दुश्मनों का चित्रण।

कुछ भजन बीमार बिस्तर पर लिखे गए हैं, भजन 134, पृष्ठ 134। इसके अलावा पृष्ठ 135 पर, वह संख्या छह, आमतौर पर स्थिति जीवन और मृत्यु की स्थिति का मामला है। यह जीवन और मृत्यु का एक महत्वपूर्ण क्षण है।

अंक सात कभी-कभी पाप के कारण बना होता है। आप अपने जीवन में पाप के प्रति जागरूक हैं और या तो आपका विवेक आपको परेशान कर रहा है या आप गहरे संकट में हैं। संख्या आठ, पृष्ठ 138 अन्य प्रकार के आंतरिक संकटों से संबंधित है जिन्हें हम देख सकते हैं।

और फिर नौ है शत्रु, जो शत्रु की स्थिति है। और ये एक साथ चल सकते हैं और यह एक अलग की मांग करता है, यह पृष्ठ 140 पर है। तो यह आठ अलग-अलग हैं, नौ बिंदु हैं।

और पहला बिंदु, ठीक है, पहला भाग जिसका हमने उल्लेख नहीं किया वह यह है कि वह यंत्रीकृत है कि स्थिति की पहचान करना हमेशा आसान नहीं होता है क्योंकि वे आलंकारिक भाषा का उपयोग करते हैं जो इसे सभी प्रकार के अनुप्रयोगों के लिए खुला छोड़ देता है। वह नंबर एक है। तो फिर पृष्ठ 131 पर वापस जाएं, इन नौ बिंदुओं, लेकिन आठ स्थितियों का व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त करें।

तो, गुंकल जो पहली बात कह रहे हैं, वह यह है कि सामान्य अभिव्यक्ति और रूपकों के कारण हर समय यह पहचानना आसान नहीं है कि सेटिंग क्या है। हालाँकि जब मैं कोष्ठक लगाता हूँ, तो मैं आपको ज्यादातर गुंकल का यह विशाल कार्य दे रहा हूँ, जिसे सभी विद्वानों द्वारा मूलभूत डेटा के रूप में मान्यता दी गई है। अधिकांश को आसानी से दाऊद के हाथों कष्ट सहना पड़ा, और दाऊद को शाऊल के हाथों और अबशालोम के हाथों तीन प्रमुख बार कष्ट सहना पड़ा।

इसलिए, कई भजन शाऊल के शत्रु और अबशालोम के शत्रु से उत्पन्न हुए हैं। और डोआग, एडोमाइट इत्यादि जैसे अन्य भी हैं। अब हम कई स्तोत्र अंशों से शुरुआत करते हैं और मंदिर में प्रार्थना करते हैं।

यहीं पर उन्हें स्थापित किया गया था। इसलिए, उदाहरण के लिए, भजन 5, लेकिन मैं, आपकी महान कृपा से आपके घर में प्रवेश कर सकता हूँ और आपके पवित्र मंदिर के सामने झुक सकता हूँ और पूजा कर सकता हूँ। जाहिर है, राजा मंदिर में प्रार्थना कर रहे हैं।

यही सेटिंग है. फिर से, वह भजन 28 में कहेगा, देख, जब मैं अपने हाथ तेरे पवित्र पवित्रस्थान की ओर उठाऊंगा, तब वे भोर को बलिदान चढ़ाए जा सकेंगे। जैसा कि भजन 5 में है, फिर से, सुबह हे प्रभु, तू मेरी आवाज़ सुनता है।

प्रातःकाल मैं अपना निवेदन तुम्हारे सामने रखता हूँ और आशापूर्वक प्रतीक्षा करता हूँ। प्रार्थना का समय भगवान से स्थिति का आकलन करने और निर्णय लेने के लिए कह रहा है। प्राचीन वर्षों में सुबह न्याय का समय था।

उन्होंने सुबह के सूरज की रोशनी में दरबार लगाया। यह प्रतीकात्मक था. ताकि सूरज की रोशनी में सब कुछ उजागर हो सके.

और यही वह समय था जब आपने सुबह दरबार लगाया था। वास्तव में, मेसोपोटामिया धर्म में, शमाश, सूर्य न्यायाधीश भगवान है, क्योंकि वह सब कुछ दिन के प्रकाश में लाता है। और इसलिए वह सुबह में है और अब वह एक न्यायाधीश के रूप में भगवान की ओर देख रहा है कि वह किसी स्थिति को देखेगा, उस पर विचार करेगा, निर्णय देगा और मुझे बचाएगा, इस तरह की चीज़।

उन्हें शाम को भी चढ़ाया जाता था, उदाहरण के लिए, भजन 141, मेरी प्रार्थना तुम्हारे सामने धूप की तरह रखी जाए। मेरे हाथों का उठाया जाना सन्ध्या के बलिदान के समान हो। और इसलिए संभवतः वह उस विशेष मामले में शाम को प्रार्थना कर रहा है।

भजन 4 में, भजन का अंत याद रखें, हे प्रभु, मैं तेरे लिए सोऊंगा, हे प्रभु, मैं तेरे लिए सोऊंगा, हे प्रभु, मुझे सुरक्षा में बसाओ। और भजन एक शाम की प्रार्थना है जब वह सोने जा रहा है। और इस सूखे और इस संकट में, वह बिना उत्तर दिए सो जाता है, लेकिन भगवान पर भरोसा रखता है।

और वह भजन 4 था। लेकिन पृष्ठ 132 पर संख्या तीन के कुछ भजन, वे अभयारण्य से काफी दूरी पर गाए गए हैं। हो सकता है कि उसे किसी विरोधी ने बंदी बना लिया हो। यह भजन 42 और 43 होगा।

भजन 42 और 43 एक भजन हैं। एक श्लोक है जो भजन 42 में और 43 के अंत में दो बार आता है। 42 संबोधित विलाप है और 43 याचिका है।

याचिका को अलग प्रार्थना के लिए चुना गया था, लेकिन यह वास्तव में एक भजन है। 42 और 43 एक भजन है. तो, यह शुरू होता है, जैसे हिरण पानी की धाराओं के लिए हांफता है।

तो, हे भगवान, मेरी आत्मा तुम्हारे लिए तरसती है। मेरी आत्मा भगवान की, जीवित भगवान की प्रबल कामना करती है। मैं कब जाकर भगवान से मिल सकता हूँ? मेरे आँसू दिन-रात मेरा आहार बने रहते हैं जबकि लोग दिन भर मुझसे कहते हैं, तुम्हारा भगवान कहाँ है? ये बातें मुझे तब याद आती हैं जब मैं अपनी आत्मा को बाहर निकालता हूँ।

कैसे मैं सर्वशक्तिमान की सुरक्षा में उत्सव की भीड़ के बीच खुशी और प्रशंसा के नारे लगाते हुए भगवान के घर जाता था। तुम मेरी आत्मा को क्यों उदास कर रहे हो ? मेरे अंदर इतनी अशांति क्यों है? अपनी आशा परमेश्वर पर रखो, क्योंकि मैं अब भी अपने उद्धारकर्ता और अपने परमेश्वर की स्तुति करूंगा। मेरी आत्मा मेरे भीतर उदास है।

इस कारण मैं यरदन के देश से, और मेजियाह पर्वत से लेकर हामान की चोटियों तक तुझे स्मरण करूंगा। तो, दूसरे शब्दों में, किसी कारणवश उसे उत्तरी देश में बंदी बना लिया गया है। वह यरूशलेम जाने, भगवान की उपस्थिति में रहने और मंदिर में पूजा करने के लिए उत्सुक है।

वहाँ ऊँचे जॉर्डन में जहाँ झरने हैं, तुम्हारे झरनों की गर्जना में गहरी पुकारें हैं, तुम्हारी सारी लहरें और ब्रेकर मुझ पर बह गए हैं। दिन में, प्रभु रात में अपने प्रेम को निर्देशित करते हैं। उनका गीत मेरे साथ है, मेरे जीवन के ईश्वर से प्रार्थना है।

मैं परमेश्वर से कहता हूँ, हे मेरी चट्टान, तू मुझे क्यों भूल गया? मुझे शोक मनाते हुए और शत्रु द्वारा उत्पीड़ित होते हुए क्यों जाना चाहिए? मेरी हड्डियाँ प्राणघातक पीड़ा सहती हैं, क्योंकि मेरे शत्रु मुझ पर ताना मारते हैं, और दिन भर मुझ से कहते रहते हैं, तेरा परमेश्वर कहाँ है? तुम मेरे प्राण क्यों उदास हो ? मेरे अंदर इतनी अशांति क्यों है? अपनी आशा परमेश्वर पर रखो, क्योंकि मैं अब भी अपने उद्धारकर्ता और अपने परमेश्वर की स्तुति करूंगा। वह भजन 42 है। और आप भजन में विलाप देख सकते हैं।

अब 43, याचिका, मुझे, मेरे भगवान को सही ठहराओ, और एक बेवफा राष्ट्र के खिलाफ मेरे मामले की पैरवी करो। मुझे उन लोगों से बचा जो धोखेबाज़ और दुष्ट हैं। तुम भगवान हो, मेरा गढ़ हो।

तुमने मुझे क्यों अस्वीकार कर दिया है? मुझे शोक मनाते हुए और शत्रु द्वारा उत्पीड़ित होते हुए क्यों घूमना चाहिए? अपनी रोशनी और अपनी वफादार देखभाल भेजें। उन्हें मेरा नेतृत्व करने दीजिए। वे मुझे तेरे पवित्र पर्वत पर, अर्थात् तेरे निवासस्थान में पहुंचा दें।

तब मैं परमेश्वर की वेदी के पास जाऊंगा, परमेश्वर के पास, मेरी खुशी और मेरी खुशी। हे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, मैं वीणा बजाकर तेरी स्तुति करूंगा। तुम मेरे प्राण क्यों उदास हो ? मेरे अंदर इतनी अशांति क्यों है? अपनी आशा परमेश्वर पर रखो, क्योंकि मैं अब भी अपने उद्धारकर्ता और अपने परमेश्वर की स्तुति करूंगा।

जाहिर है, वह मंदिर में नहीं है। वह मंदिर जाने के लिए उत्सुक है, लेकिन वह निर्वासन के रूप में यह भजन गाता है, मंदिर में वापस जाने की लालसा रखता है। खैर, यह यहां सूचीबद्ध अन्य भजनों के बारे में भी सच है।

हमने वह पढ़ा है। मुझे लगता है कि कुछ भजन हैं और निस्संदेह हमें उन्हें पढ़ना चाहिए। और यह हमारे पास मौजूद महान भजनों में से एक है।

कभी-कभी संख्या चार में, विकसित नहीं होने पर, शत्रुओं का चित्रण अभयारण्य से हटा दिया जाता है। गुंकल के साथ यहां क्या होता है और उसने यहां क्या किया, आप डेटा देख सकते हैं। उदाहरण के लिए, यह डेटा है, अभयारण्य से हटाए गए दुश्मनों का चित्रण।

सुनते हैं कि विरोधियों ने उन्हें घेर रखा है. फुटनोट 158. ऐसे भजन हैं जहाँ आप सुनते हैं कि शत्रुओं ने उसे घेर लिया है।

वे उसे ढूँढते हैं। वे उसकी प्रतीक्षा में लेटे रहते हैं। इसके लिए डेटा है.

फुटनोट में 159. वे उसके दुर्भाग्य पर खुशियाँ मनाते हैं। वहाँ डेटा है.

वे उस पर ताना मारते हैं और उस पर हंसते हैं। 161. जब हम ये बातें सुनते हैं, तो हम किसी पूजा सेवा सेटिंग की ओर नहीं, बल्कि बाहर जीवन की एक ऐसी स्थिति की ओर ले जाते हैं, जहाँ पीड़ित व्यक्ति यहोवा की सहायता से अलग हो जाता है, इत्यादि।

तो, दूसरे शब्दों में, गुंकल ने यह सारा डेटा एकत्र कर लिया है और यह आपके फुटनोट्स में मौजूद है। जैसे-जैसे आप इसे पढ़ते हैं और पढ़ते हैं, आपको स्तोत्र का एक व्यापक दृष्टिकोण और इसकी सामग्री का एहसास होना चाहिए। नंबर छह, सेटिंग, जीवन और मृत्यु की स्थितियाँ।

गुंकल का कहना है कि ये प्रार्थनाएँ रोजमर्रा की घटनाओं का इलाज नहीं करती हैं। बल्कि वे जीवन और मृत्यु के बीच के भयानक निर्णय का इलाज करते हैं। शत्रुओं और प्रार्थना करने वाले के बीच का संबंध इस बात से भी जुड़ा है कि कौन जीवित रहेगा और कौन मरेगा इत्यादि।

वह छठे नंबर पर है. क्रमांक सात सेटिंग, पृष्ठ 136। वे कभी-कभी प्रायश्चितात्मक होते हैं।

कभी-कभी यह बीमारी में होता है. प्रायश्चित्त बीमारी में है. वहाँ मैंने एक पूरा भजन दिया, भजन 38, लेकिन मुझे पूरा भजन पढ़ने में समय नहीं लगेगा, लेकिन आपके नोट्स में वह मौजूद है।

ये प्रायश्चित्त स्तोत्र, न केवल बीमारी, बल्कि जीवन की संक्षिप्तता की ओर भी ध्यान दिलाते हैं। मुझे आशा है कि जिन भजनों को हम छू सकते हैं उनमें से एक भजन 90 है, जो जीवन की संक्षिप्तता को छूता है। नंबर आठ, सभी प्रकार के आंतरिक कष्ट और इच्छाएँ हैं, अर्थात्, ईश्वर के साथ रहने की इच्छा।

पृष्ठ 139 पर सभी प्रकार के भारी विचार विकसित किए गए हैं। उसके लोगों का संकट और भाग्य है जो उसे चिंतित करता है, पृष्ठ 140। और कुछ भजनों में, ऐसा लगता है कि उस पर मुकदमा चल रहा है, पृष्ठ 140 पर एक और सेटिंग है।

लेकिन यहां सबसे अच्छा जो मैं कर सकता हूँ वह है एक तरह से एक भावना का सर्वेक्षण करना। यदि आप स्तोत्र से परिचित हैं, तो मुझे लगता है कि आप पहचान गए हैं कि यह वास्तव में स्तोत्र का ताना-बाना है। पृष्ठ 140, हमारे पास सामुदायिक विलाप हैं और आपके पास सामुदायिक विलाप हैं जो पृष्ठ के निचले भाग में शामिल हैं।

अब हम पेज 141 पर आते हैं और दुश्मनों के बारे में बात करते हैं। यहां हम शब्दों के व्यापक उपयोग के बारे में बात करेंगे। दुश्मन को संदर्भित करने के कई तरीके हैं।

फिर इनमें से अधिकांश शब्द, बी, को नैतिक संदर्भ में परिभाषित किया जाएगा। फिर हम सी के बारे में बात करने जा रहे हैं, जो दुश्मनों का वर्णन है। फिर मैं आपको उल्लेखनीय रूप से दिखाने जा रहा हूँ कि मोविनकेल और गुंकेल क्या सोचते हैं, क्योंकि वे डेविड को अस्वीकार करते हैं और वे ऐतिहासिक राजा को अस्वीकार करते हैं, मोविनकेल क्या करता है, गुंकेल क्या करता है।

यह आश्चर्यजनक है कि वह इस सारे डेटा के साथ, इसकी पूरी तरह से गलत व्याख्या कैसे कर सकता है, जो मुझे पहले दिन हेर्मेनेयुटिक्स में वापस ले जाता है। उसकी पूर्व-समझ उसे भजन संहिता की पुस्तक की पूरी तरह से गलत व्याख्या की ओर ले जाती है। यह मेरे लिए बिल्कुल आश्चर्यजनक है कि आप यह सारा डेटा प्राप्त कर सकते हैं।

तो, मैं आपको केवल मोविनकेल की व्याख्या देने जा रहा हूँ। दो महान विद्वान हैं। एकेडेमिया, गुंकेल और मोविनकेल में हर किसी को सुनाना होता है।

मोविनकेल नॉर्वेजियन विद्वान हैं और वह गुंकेल के छात्र थे। मैं बस उसे उद्धृत करूँगा। यह मुझे आश्चर्यचकित कर देता है।

लेकिन फिर भी, चलो दुश्मनों के बारे में बात करते हैं। यहां ए के तहत, हमारे पास दुश्मन के लिए शब्दों का व्यापक उपयोग है। केवल हमें शत्रु कहने के अलावा, मैंने इसे एक फुटनोट में भी रखा है।

तो, यह भारी पड़ने वाली बात नहीं है। दुश्मन के लिए सभी अलग-अलग शब्द हैं और वे सभी संदर्भ हैं जिन्हें गुंकेल ने बहुत सावधानी से पहचाना है। यह एक विशाल डेटा है।

तो, और पृष्ठ 141 पर बी दुश्मन के लिए नैतिक शब्दों का व्यापक उपयोग है। दुश्मन कौन है इसका एहसास पाने के लिए इसे पढ़ना सार्थक हो सकता है। आप जानते हैं, जब आपके पास यह बी के अंतर्गत होता है, तो हम इसे कहते हैं, हम दुश्मन को एक सैन्य दुश्मन मानते हैं।

ओह हां। और इसलिए, आप बस गवाहों, धूर्त, धोखेबाज लोगों की उस पंक्ति को देखें। यह तो बहुत ही मज़ेदार है।

हाँ। इसे उन विभिन्न पदनामों में विभाजित करना। यह सही है।

वह राजनीतिक रूप से सही नहीं हैं। वह कुदाल को कुदाल कहता है। मैंने यहां वे हिब्रू शब्द डाले हैं जो वहां मौजूद हैं, लेकिन आप उन सभी को छोड़ सकते हैं।

वे बुराई करते हैं। वे खलनायक हैं। वे ढीठ हैं।

वे अहंकारी हैं. वे घमंडी हैं. वे हिंसक, कुटिल, बलवान, झूठ बोलने वाले गवाह, दुष्ट, हिंसा करने वाले, धोखेबाज और धूर्त हैं।

वह उन्हें इस तरह नैतिक शब्दों में लेबल करता है। शत्रु यह है कि हम आध्यात्मिक युद्ध में हैं। और मैंने कल कहा था कि पृथ्वी बहुत छोटी दिखती है, लेकिन यह पूरे ब्रह्मांड के भीतर का चरण है, भले ही आप इसे हबल दूरबीन से हमारी आकाशगंगा के अंत से नहीं देख सकते हैं, यह सिर्फ एक छोटा सा चरण है।

और इस स्तर पर, हमारे सामने न्याय और अन्याय के बीच, सत्य और त्रुटि के बीच, सद्गुण और पाप के बीच युद्ध है। और हम मसीह और शैतान के बीच इस संघर्ष में हैं। उसके लिए आपको किसी बड़े ब्रह्मांड की आवश्यकता नहीं है।

हम ही मंच हैं और हम ही उस मंच के अभिनेता भी हैं। और भगवान ने हमें विश्वास, आशा, प्रेम, सदाचार बनाम आत्मविश्वास, स्वार्थ, निराशा के मार्ग पर चलने वाले अभिनेता बनने के लिए चुना। केवल इस दुनिया में हम महान आध्यात्मिक युद्ध में हैं।

और जब हम नए नियम पर आते हैं, तो यह इसे और भी स्पष्ट कर देता है। हम मांस और रक्त के विरुद्ध नहीं, बल्कि रियासतों और शक्तियों के विरुद्ध कुशती लड़ रहे हैं। हम आध्यात्मिक शक्तियों के विरुद्ध लड़ रहे हैं, लेकिन पुराने नियम में यह उतना स्पष्ट नहीं है।

नए नियम में यह स्पष्ट कर दिया गया है कि इन दुष्ट लोगों, शत्रु, के पीछे शैतान और बुरी ताकतें हैं। c. वह शत्रु का कई प्रकार से वर्णन करता है। उन्होंने युद्ध के मैदान में चित्रण का वर्णन किया है, कि वे सैन्य दुश्मन हैं।

दो, उनकी छवि शिकारी के रूप में है और वह, धर्मी लोग शिकार किए गए जानवरों की तरह हैं। और तीन, वह दुश्मन के लिए पशु, जूमोर्फिक पशु इमेजरी का उपयोग करता है। वे शेर, बैल, कुत्ते हैं।

चार, उनके कुटिल तरीके, उनकी गुप्त राय और उनके तिरस्कारपूर्ण शब्द यहां एक साथ समूहीकृत हैं। उनके तरीके, उनकी राय और उनके शब्द। वह चौथे नंबर पर है.

और नंबर पांच, वे ईश्वर के विरोधी हैं। युद्ध के मैदान में वापस जाने पर, और आप देख सकते हैं कि वहां कुछ संख्या में लोग हैं, वे एक हमलावर सेना हैं। वह शत्रु सेना से घिरा हुआ है और उस पर तीर चलाये जा रहे हैं।

शत्रु उनके विरुद्ध ऐसे दौड़ते हैं जैसे वे किसी गिरी हुई दीवार के विरुद्ध दौड़ते हों। इसी के अनुरूप, अक्सर दुश्मन के हाथ में तलवार या उनके धनुष और तीर का उल्लेख किया जाता है। और मुझे लगता है कि यह राजा के लिए शाब्दिक है क्योंकि वह अपने शारीरिक साम्राज्य के लिए शाब्दिक लड़ाई में लगा हुआ है।

वह भौतिक दैहिक साम्राज्य की स्थापना कर रहा है। हमारा राज्य अधिक आध्यात्मिक राज्य है। हम एक राजनीतिक राष्ट्र नहीं हैं।

हम एक आध्यात्मिक राष्ट्र हैं। आप चुने हुए लोग हैं। पतरस ने कलीसिया से कहा, तुम पवित्र जाति हो, और हम आत्मिक मन्दिर हैं।

यह सब 1 पीटर 2.9-10 है। हमने उस दिन उस बारे में बात की थी। हालाँकि, एक छवि जिसका उपयोग उनके शिकारियों द्वारा किया जा रहा है और वह एक शिकार किया गया जानवर है। विरोधी पवित्र लोगों के सामने गुप्त जाल बिछाते हैं जैसे कि कोई जानवर के रास्ते में बिछाता है।

फिर आप 176, सभी भजन देखें। वे रास्ते में कब्रें खोदते हैं ताकि संदेह न करने वाले लोग उनमें गिर जाएँ। तुम्हें नष्ट करने के लिए हर तरह के जाल।

177, जहां वे उसका पीछा करते हैं जैसे कोई शिकार पर किसी जंगली जानवर का पीछा करता है। और 178 आपको सब कुछ देता है। आप उस सामूहिक सामग्री को देख सकते हैं जो गंकल हमें भजन देखने में मदद करने के लिए यहां दे रही है।

ये व्याख्यान मेरे लिए नए हैं, वैसे, मैंने कभी इस तरह से नहीं पढ़ाया है। इस पाठ्यक्रम की तैयारी के लिए मैंने दो महीने पहले ही गंकल की पढ़ाई पूरी की है। तो, यह ऐसा कुछ नहीं है जो मैंने पहले कभी किया हो, इसे इतने व्यापक रूप से और इस तरह की गहराई के साथ सिखाना मेरे लिए नया है।

हम कुछ ऐसे भजन कर रहे हैं जो मैंने पहले कभी नहीं किए हैं क्योंकि मैं जो टिप्पणी लिख रहा हूँ। तो, यह मेरे लिए एक बढ़ता हुआ अनुभव रहा है। यह अच्छा रहा।

जूमॉर्फिक इमेजरी, जानवरों की छवियां और अन्य मार्ग दुश्मन के बारे में वैसे ही बात करते हैं जैसे वे जंगली जानवरों के बारे में करते हैं, जिससे भजनहार के डर को पहचाना जा सकता है। यह होना चाहिए, ओह, वे सहन करते हैं, यह नंगे होना चाहिए। वे अपने दाँत सहन करते हैं।

वे अपना मुँह फाड़ देते हैं और उसका मांस खाने के लिए लालायित रहते हैं। वे शेर हैं जो किसी को शिकार करने के साथ-साथ क्रोधित बैल या काटने वाले कुत्तों से भी धमकाते हैं। भगवान उनके दंश को कुचल दे और उनके दाँत तोड़ दे।

यदि हमारे पास भजन 3 में समय हो तो हम देखेंगे। फिर वहाँ टेढ़े रास्ते और गुप्त राय हैं। गंकल ने हमारे लिए फिर से सभी भजनों का सारांश प्रस्तुत किया है, जहां आपको वह मूल भाव मिलेगा। उन्होंने स्तोत्र में वर्षों बिताए।

वह डेटा का मास्टर है। इसलिए, यह सब हमारे सामने रखना हमारे लिए सौभाग्य की बात है। यह वास्तव में है, यह गहराई में है।

मैं सिर्फ सतह काट रहा हूँ। जब आप इन सभी भजनों और इन सभी छंदों पर आते हैं, तो यह एक व्यापक स्तर पर गहराई से काम कर रहा है। तो, हम इसे पाकर बहुत भाग्यशाली हैं।

मैं अब भी सोचता हूँ कि हम मिस्रवासियों को लूट रहे हैं, लेकिन किसी भी मामले में, वे भगवान, नंबर पांच के विरोधी हैं। अब पृष्ठ 144 पर शत्रु कौन है? यहाँ मोविनकेल है। वह बुराई करने वालों, बुराई करने वालों, बुराई करने वालों की व्याख्या करता है, जैसा कि हमने भजन 92 में देखा, आप जानते हैं, बुराई करने वाले सभी लोग।

वह उस अभिव्यक्ति की व्याख्या उन सभी से करता है जो जादू करते हैं। दूसरे शब्दों में, जादुई तरीके से, वे अपने शब्दों से जादू कर रहे हैं, और वही उन्हें नष्ट कर देगा, वे ही जादूगर हैं। ये जादूगर हैं जो शत्रु को नष्ट करने के लिए जादू कर सकते हैं, और भजनहार को भी नष्ट कर सकते हैं।

तो, वे जादूगर हैं। किसी ने भी उसका अनुसरण नहीं किया है, लेकिन वह उस पर बहुत समय खर्च करता है। यहाँ गंकेल है।

वह भजनहार को आदिम भावनाओं से युक्त बताते हैं। इससे उसका तात्पर्य यह है कि वह मानसिक रोगी है, कुछ हद तक विक्षिप्त है, और शायद उसे व्यामोह है। मुझे उसे जितना मैंने उद्धृत किया उससे अधिक विस्तृत रूप से उद्धृत करना चाहिए था।

यह सीधे तौर पर गुंकेल है। मूल रूप से, वे शाही थे लेकिन बाद में आम नागरिक के लिए रूपक के रूप में अपना लिए गए। तो, वह पहले मंदिर में कह रहा है, वे मौखिक रूप से उत्पन्न हुए थे और यह राजा के लिए था।

लेकिन वास्तव में हमारे पास जो है वह दूसरे मंदिर के लिए है। यह सैन्य कल्पना उन लोगों के लिए एक रूपक है जो दूसरे मंदिर में रह रहे हैं। वे बीमार हैं, वस्तुतः बीमार हैं।

लेकिन वह यह भी सुझाव दे सकता है, उसने यह भी सुझाव दिया है, वे मनोवैज्ञानिक रूप से बीमार हो सकते हैं। यह विशेष रूप से सच होगा, वह कहते हैं, युद्ध के बारे में बयानों के लिए, उन्हें शाब्दिक रूप से लेने से उन्हें किसी अन्य प्रकार के संदर्भ में बदलने से मना किया जाता है, लेकिन उन्हें लगता है कि वे रूपक हैं। सच तो यह है कि प्रार्थना करने वाले कोई महान राजनेता नहीं, बल्कि आम नागरिक हैं।

इन कथनों के लिए उपयोग किए गए मॉडल को शाही शिकायत गीतों में खोजा जाना चाहिए जिनकी नकल व्यक्तिगत शिकायत गीतों द्वारा की जाती है। मुझे लगता है ये चलता रहेगा, उनकी नजर में आम नागरिक बीमार है। इस प्रक्रिया में, व्यक्तिगत शिकायत गीत अपना शाब्दिक अर्थ खो देते हैं और छवियाँ और प्रतीक बन जाते हैं।

वह पृष्ठ 145 पर भजन 191 का हवाला देता है। मुझे लगता है कि यह एक गलत व्याख्या है। वहाँ राक्षसी शक्तियों का कोई जिक्र नहीं है।

लेकिन अब देखिए, मैं उद्धृत कर रहा हूँ, यह वह है, ठीक है, इसे संक्षेप में प्रस्तुत कर रहा हूँ। प्रार्थना, वाई और ई के बीच एक हाइफ़न होना चाहिए, प्रार्थना, प्रार्थना करने वाला। प्रार्थना अपने दृष्टिकोण में शारीरिक रूप से बीमार है, कभी-कभी रोगात्मक और कामुक रूप से, जिसे गुंकेल आदिम भावनाएँ कहते हैं।

उद्धरण, जब आप दुश्मनों के बारे में बात करते हैं तो पहली बात जो किसी को समझनी चाहिए, वह यह है कि प्रार्थना करने वाला व्यक्ति खुद को दुश्मनों की दुनिया से घिरा हुआ देखता है। इस संसार की व्याख्या केवल पीड़ित व्यक्ति की भावुक अतिशयोक्ति के आधार पर नहीं की जा सकती। जब कोई व्यक्ति शिकायत गीत, अत्यधिक बीमारी और भयानक नश्वर खतरे के मूल कारण से आगे बढ़ता है तो वह उन्हें समझने के करीब आता है।

मैंने पूरी बात उद्धृत नहीं की, लेकिन दूसरे शब्दों में, क्योंकि वह इस मनोवैज्ञानिक रूप से बीमार है, वह कल्पना करता है कि ये गुंकेल के वास्तविक दुश्मन नहीं हैं। वह अपने शत्रुओं की कल्पना करता है। दूसरे शब्दों में, उसे व्यामोह है।

कल्पना करें कि वह वास्तव में दुश्मनों से घिरा नहीं है, लेकिन वह अकेला महसूस करता है जैसा कि एक व्यक्ति महसूस कर सकता है। उसे ऐसा ही महसूस होता है। तो, भजनहार मनोवैज्ञानिक रूप से ठीक नहीं है।

डॉ. वाल्टके, आपको ऐसा क्यों लगता है कि वह उस व्याख्या के साथ चलते हैं, जो इतिहास को देखते हुए वह निस्संदेह इज़राइल के बारे में जानते हैं? आपको ऐसा क्यों लगता है कि वह यह व्याख्या करेगा, इस तथ्य को देखते हुए कि वह निस्संदेह इज़राइल का इतिहास जानता है? जो कष्ट हुआ उसे वह जानता है, चाहे वह जानता हो या नहीं, लेकिन वह जानता है कि ये कष्ट वास्तविक नहीं हैं। आपको क्या लगता है कि इतना सारा डेटा होने के बाद भी वह वहाँ क्यों जाता है? क्या वह हमें अपनी व्याख्या में बताता है कि वह वहाँ क्यों जाता है? नहीं, यह उस पर आधारित नहीं है। पूरी बात इसलिए है क्योंकि, ठीक है, मैं यही कह रहा हूँ।

व्याख्यान के लिए यह इतना महत्वपूर्ण था कि वे राजा और डेविड द्वारा थे। अब वह मानते हैं कि उनकी उत्पत्ति शाही संदर्भ से हुई है, लेकिन वह निष्कर्ष निकालते हैं कि वे वास्तव में हैं, और यह है, हमने एक अन्य व्याख्यान में इस पर चर्चा की है, यह यहाँ एक पूरे पूर्वकल्पित आधार पर वापस जाता है कि यह सामग्री दूसरे मंदिर की है। वह इस बात से इनकार करता है कि यह राजा है।

वह कहते हैं, मूलतः यह युद्धरत एक राजा था। वहाँ यही था, लेकिन हमारे पास वह नहीं है। यह विस्मयकरी है।

तो, यह दूसरे मंदिर के लोगों के लिए है। वे वेलहाउज़ेन के समय की उच्च आलोचना से इस ओर आये थे। यह पूरी पृष्ठभूमि है, लेकिन उन्हें यकीन है कि यह दूसरा मंदिर है जब उनके पास कोई राजा नहीं है।

तो, यह व्यक्ति है। तो अब उस व्यक्ति का क्या दोष? और वह इस अनुमान से शुरुआत करता है कि वह शारीरिक रूप से बीमार है। ठीक है।

तो अगर कोई व्यक्ति शारीरिक रूप से बीमार है तो उसके दुश्मन कौन हैं? और वह एक निष्कर्ष निकालता है कि वे उसके दिमाग में हैं। यह विस्मयकरी है। यदि धर्मी लोग मनोविक्षिप्त, विक्षिप्त या पागल हैं तो आप उनके बारे में इतना सारा विवरण क्यों खर्च करेंगे? आप यह सब क्यों करेंगे? यही बात मुझे इस निष्कर्ष पर पहुंचने पर आश्चर्यचकित करती है कि यह एक ऐसा व्यक्ति है जो शारीरिक रूप से बीमार है।

वह यह सब कल्पना करता है, जो मानसिक कल्याण नहीं है। तो, दुश्मन अब नहीं है, और होता यह है कि ये सभी नैतिक शर्तें अब दुश्मन नहीं हैं। होता यह है कि वास्तव में पवित्र लोग, हम यह देखेंगे, पवित्र लोग गरीब होते हैं और दुष्ट लोग अमीर होते हैं।

हम एक वर्ग युद्ध में समाप्त होते हैं। जो होता है वह अविश्वसनीय है। और यह बाद के साहित्य में भी चलता रहा क्योंकि उन्होंने यह मान लिया कि धर्मपरायण लोग गरीब हैं और यह मान लिया गया है कि अमीर दुष्ट हैं।

इसलिए, पवित्र व्यक्ति भजनहार के विरुद्ध भी लड़ रहा है जिसका धर्मात्मा अमीरों के विरुद्ध लड़ रहा है। और हम एक वर्ग युद्ध के साथ समाप्त होते हैं। मेरा मतलब है, यह स्तोत्र का एक ऐसा घटियापन है।

मैं मुश्किल से इसे बर्दाश्त कर सकता हूँ। यह तथाकथित छात्रवृत्ति है। तो मुझे बस जाने दीजिए, वह यहाँ आता है।

प्रायश्चित्तात्मक स्तोत्र, आप इसे कैसे समझाते हैं? वे पाप की एक सहज अहंकारी भावना हैं। यह अहंकारी है कि मैं इतना महत्वपूर्ण हूँ। उनका कहना है कि संघर्ष वर्ग युद्ध के कारण है।

धर्मात्मा गरीब हैं और यह अमीरों के खिलाफ है। और इसलिए, पवित्र लोगों के लिए धार्मिक विरोधाभास यह आश्चर्य करता है कि अमीर दुष्ट हैं इत्यादि। तो, मेरी राय में, यह मोना लिसा की तरह है जो मैंने पहले दिन कहा था।

और पूरी समस्या यह है कि मुझे नहीं लगता कि उसके पास पूर्व-सम्मान के तहत कोई अधिकार है। मुझे लगता है यह कठिन है। आप इस तक कैसे आ सकते हैं, आपके दिल में, मेरे दिमाग में कुछ गड़बड़ है।

और वह पूर्व-समझ है। इसीलिए मेरा पहला व्याख्यान व्याख्याशास्त्र और आध्यात्मिक समझ पर था। यह भजनों की व्याख्या के लिए महत्वपूर्ण है।

और हम चर्चा करेंगे, हाँ, अब हम उन उद्देश्यों पर जायेंगे जो हमारे पास हैं। यह पृष्ठ 145 पर है। और मुझे आशा है कि मुझे स्तोत्र का एक व्यापक दृष्टिकोण मिलेगा और एक व्यापक दृष्टिकोण इन शत्रुओं को ध्यान में रखेगा।

लेकिन अब हम याचिका स्तोत्रों को देख रहे हैं और हम यहां देख रहे हैं, हमने नैतिक शर्तों को देखा। हमने उन विभिन्न जीवन सेटिंग्स को देखा जहां से वे उत्पन्न हुए थे, जिन्हें मैंने पाया, मैंने और फिर हमने देखा कि जीवन सेटिंग्स के हिस्से के रूप में ये दुश्मन कौन हैं। वह अपने जीवन परिदृश्य के हिस्से के रूप में अपने चारों ओर दुश्मनों के साथ है।

और अब हम इस तरह के भजन के रूपांकनों को देख रहे हैं और इसमें पाँच रूपांकन हैं। वह पता है जो पृष्ठ 146 पर है। वह विलाप है जो पृष्ठ 147 पर है।

याचिका है। हमने पृष्ठ 148 पर उस पर चर्चा की। और फिर आपको पृष्ठ 186 तक एक लंबा रास्ता तय करना होगा।

हम आत्मविश्वास में आते हैं, चौथा मूल भाव, आत्मविश्वास। मुझे लगता है कि यह पृष्ठ पर है, नहीं, एक पृष्ठ 156 होना चाहिए। हाँ, पृष्ठ 156 पर।

हम मेलानी को यहां सात-लीग जूते के साथ पाठ्यक्रम के बारे में बताने जा रहे हैं। और अंत में, भजन के निष्कर्ष पर हम पृष्ठ 160 पर चर्चा करते हैं। ठीक है।

सबसे पहले, संबोधन का मूल भाव। तो, हमारे पास पता है, विलाप है। और मुझे वह आदेश पसंद नहीं है जो कुंकल ने यहां इस्तेमाल किया है।

मैं स्पष्ट रूप से इसे इस तरह से ऑर्डर करूंगा, लेकिन मैंने उनके परिचय का पालन किया। आपके पास संबोधन है, विलाप है, विश्वास है, याचना है। दूसरे शब्दों में, विश्वास आम तौर पर विलाप और याचिका के बीच आता है ताकि कोई व्यक्ति आत्मविश्वास और विश्वास के साथ प्रार्थना कर सके।

और फिर यह एक निष्कर्ष के साथ समाप्त होगा जिस पर हम गौर करेंगे। तो आइए उनमें से प्रत्येक पर विचार करें। सबसे पहले, ईश्वर का संबोधन या आह्वान।

और यह बस कुछ बुनियादी जानकारी है। मुझे नहीं लगता कि मुझे पृष्ठ 146 पर ईश्वर के संबोधन पर चिंतन को और अधिक विकसित करने की आवश्यकता है। पृष्ठ 147, हमारे पास शोक या शिकायत है।

और व्याख्यान में मैं जो एकमात्र बिंदु कहना चाहता हूँ वह बिंदु संख्या चार है, कि शिकायत के तीन सामान्य उप-उद्देश्य हैं जो सार्थक हैं। पहला यह है कि भगवान अनुपस्थित प्रतीत होते हैं जैसा कि प्रसिद्ध भजन 122 में है। लेकिन उदाहरण के लिए, आप पढ़ेंगे, मुझे आपकी आंखों के सामने से निकाल दिया गया है।

फुटनोट 123 आपको श्लोक देता है। प्रभु मेरी नहीं सुनेंगे। आप इसी तरह महसूस करते हैं।

छंद. हे प्रभु, आप दूर क्यों खड़े हैं? संकट के समय तुम अपने आप को क्यों छिपाते हो? भजन 10.1. हे भगवान, हे भगवान, आपने मुझे क्यों छोड़ दिया? भजन 122.1. तो, ऐसा डेटा है कि भजनहार को लगता है कि भगवान ने उसे त्याग दिया है, जैसा कि हम करते हैं। ऐसे समय होते हैं जब आप प्रार्थना करते हैं।

यह मुझे कभी-कभी लगता है, यह ऐसा है जैसे सेंट लुइस कहते हैं, आप दरवाजा खटखटाते हैं और दरवाजा कभी नहीं खुलता है। आप तब तक खटखटाते हैं जब तक आपके पोर खूनी कच्चे न हो जाएं। और यह हालांकि है, और जब आप इसकी जांच करते हैं, और यह नहीं खुलता है।

जब आप इसकी अधिक बारीकी से जांच करते हैं, तो यह डबल बोल्ट वाला प्रतीत होता है। जब आप ऊपर देखते हैं, तो ऐसा लगता है मानो रोशनी बुझ गई हो। घर पर कोई नहीं है।

वह कोई असामान्य आध्यात्मिक अनुभव नहीं है। इसीलिए भजन इतने लोकप्रिय हैं क्योंकि वे ईमानदार हैं। हम इन भावनाओं और इन सिद्धांतों की पहचान कर सकते हैं क्योंकि वह उन्हें अभिव्यक्ति देता है और वह हमें इसके बीच में विश्वास की मुद्रा में वापस लाने में सक्षम है।

वह न केवल महसूस करता है कि ईश्वर अनुपस्थित है, बल्कि उसे लगता है कि शत्रु बहुत शक्तिशाली है। उनमें से बहुत सारे हैं। और कभी-कभी जब मैं समाचार मीडिया को देखता हूँ और अपनी दुनिया को देखता हूँ, तो मुझे स्वीकार करना होगा कि दुश्मन बहुत मजबूत लगता है।

आपको आश्चर्य है कि दुनिया में इसे कैसे सही किया जा सकता है? दुनिया में इसे कभी कैसे बदला जा सकता है? और हम पहचानते हैं कि दुश्मन बहुत ताकतवर है। परन्तु जो आत्मा हम में है वह उस आत्मा से जो हमारे विरुद्ध है, महान है। अंततः, भगवान पराजित नहीं होंगे।

भजन इसी बारे में हैं। हम जीतेंगे. और तीसरा, मैं सामना नहीं कर सकता और मैं मृत्यु के कगार पर हूँ।

मैं अब और नहीं चल सकता. मुझे आपके हस्तक्षेप की आवश्यकता है. इसलिए, मुझे लगता है कि यहां रोमांस अनुभाग में उन बिंदुओं का उल्लेख करना उचित है।

अब हम इसके मर्म पर आते हैं। और ये इसका प्रमुख हिस्सा है. मैं जानता हूँ कि यह 148 से 156 तक जाने वाला है, क्या ऐसा था? तो, कुछ इस तरह, जैसा कि हम याचिका के बारे में सोचते हैं।

तो, हम यहां जिस बारे में बात करने जा रहे हैं वह यह है कि यह सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। नंबर एक, उनके पास आमतौर पर भगवान से सुनने के लिए एक सामान्य प्रार्थना होती है। वह ईश्वर के दरबार में आ रहा है और प्रार्थना कर न्याय और हस्तक्षेप की मांग कर रहा है।

वह भगवान से अपने मामले की सुनवाई के लिए प्रार्थना कर रहा है। इसलिए, वह मामले को देखने के लिए उनके समक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं। वह कभी-कभी काफी कड़ी भाषा का प्रयोग करता है।

मुख्य बात यह है कि ईश्वर दया करेगा और मेरी सहायता करेगा या मुझे छुटकारा दिलाएगा। और मैं उस पर वापस आना चाहता हूँ। चौथा बिंदु जो पृष्ठ 149 पर है वह विशिष्ट अवलोकन योग्य संदर्भ है।

हम इसे पूरी तरह से छोड़ सकते हैं। याचिका में पांचवें नंबर पर वह जज की बेंच के सामने न्याय की मांग कर रहे हैं। छठे नंबर पर, वह अपनी याचिका प्रस्तुत करता है।

संख्या सात, यह दो विशिष्ट विशिष्ट स्थितियों या तीन के बारे में बात करती है। आपको इकबालिया याचिकाओं और विरोध याचिकाओं के बीच अंतर करना होगा। मैं उस पर वापस आऊंगा।

खैर, आठवें नंबर पर वह इच्छाओं के बारे में बात करता है। हम उसे छोड़ सकते हैं। नंबर नौ, दुश्मन के खिलाफ निर्देशित याचिकाएं और शुभकामनाएं।

हम इसे उपदेशात्मक स्तोत्र में एक अलग खंड में संभालने जा रहे हैं। यह पृष्ठ 152 पर है। पृष्ठ 154 पर संख्या 10, वह मेलानचोल के जादू के दृष्टिकोण को खारिज करता है।

नंबर 11, वह निंदनीय प्रश्न उठाता है, हे भगवान, कब तक इत्यादि। संख्या 12 ईश्वरीय हस्तक्षेप का औचित्य है। आइए पृष्ठ 148 पर वापस जाएँ, जहाँ हम जा रहे हैं।

तो, नंबर एक, यह सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। नंबर दो, वह भगवान से प्रार्थना कर रहा है कि वह उसका मामला सुने, उसकी प्रार्थना सुने, देखे। उसे कभी-कभी लगता है कि भगवान सो रहे हैं और वह जाग जाता है और देखता है कि यहां क्या हो रहा है।

बहुत, बहुत नाटकीय। मुख्य बात यह है कि भगवान उसकी मदद करेंगे और उसे बचाएंगे या एक बहुत ही महत्वपूर्ण विचार उद्धार करना है। यह एक महत्वपूर्ण शब्द है, मुझे पहुँचाओ।

आपके पास इस शब्द का अनुवाद होगा उद्धार करना, बचाना, बचाव करना। यह यीशु के नाम, यहुशुआ पर वापस जाता है। याशुआ, होशिया, इसके दो विचार हैं।

पहला विचार, और शायद आप बेहतर होंगे, यह सब नीचे लिखा गया है। शायद आपके लिए बेहतर होगा कि आप मुझे पढ़ने और सुनने की कोशिश करने के बजाय सिर्फ सुनें और जानें कि यह यहां नोट्स में है। और आप उस पर वापस जाएं।

यहूशुआ के लिए दो विचार, पहला विचार यह है कि एक सैन्य हस्तक्षेप होगा जिसमें भगवान हस्तक्षेप करेंगे। दूसरा विचार जो हमेशा मौजूद रहता है वह यह है कि इसकी एक न्यायिक धारणा भी है क्योंकि यह सही है। इसलिए, जब उसने छुड़ाए जाने के लिए कहा, तो वह भगवान से हस्तक्षेप करने और उसे बचाने के लिए कह रहा है।

दूसरा विचार हमेशा साथ रहता है क्योंकि वह सही है। वे मूल विचार हैं जो यहां इन नोट्स में हैं। मैं सॉयर के तर्क के बाद मामले पर बहस करने का प्रयास करता हूँ।

हालाँकि, पृष्ठ 149 पर एक बिंदु यह है कि हमें टिप्पणी करनी चाहिए कि हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें हमारी स्थिति से बचाए क्योंकि यह उचित है। लेकिन फिर मैं यह भी जोड़ता हूँ कि न्याय के लिए काम करने की जिम्मेदारी सीधे राजा पर आती है और सबसे ऊपर मैं हूँ। यदि ईश्वर निर्दोष पीड़ित की मदद करने में विफल रहता है, तो पीड़ित को शर्मिंदा होना पड़ता है।

लेकिन अब ध्यान दें कि बलात्कार के मामले की तरह, अन्याय करने वाले पक्ष की भी चिल्लाने की जिम्मेदारी है। यदि किसी महिला के साथ बलात्कार होता है और वह चिल्लाती नहीं है, तो वह आंशिक रूप से दोषी है। तो इसलिए, जब आप इस स्थिति में हों तो आपको चिल्लाना होगा।

यही कारण है कि भजनकार बार-बार इस बात पर जोर देता है कि उन्होंने प्रतिक्रिया में अपनी आवाज उठाई है, न्याय के मार्ग को कायम रखने के लिए मुझ पर भरोसा किया जाता है। तो, हम इसे वहीं जाने देंगे। हो सकता है कि मैंने इसे बहुत दृढ़ता से कहा हो, लेकिन जब आप बलात्कार के बारे में निर्णय दे रहे हैं, तो यह दिखाया जाना चाहिए कि महिला प्रसव के लिए रो रही थी।

लेकिन मैं उस पूरे कानून में नहीं पड़ना चाहता। यह बहुत बड़ी चर्चा है। लेकिन मुद्दा यह है कि जब आप संकट में होते हैं, तो रोना आपकी जिम्मेदारी है।

अगर तुम चिल्लाओगे नहीं तो कुछ गड़बड़ है। चलिए इसे यहीं जाने देते हैं। और मैं उस पैराग्राफ में यही बात कह रहा हूँ।

नंबर सात, विशेष परिस्थितियाँ जिन पर मुझे लगता है कि टिप्पणी करना उचित है। विशेष स्थिति एक इकबालिया याचिका हो सकती है। यह आप कबूल कर रहे हैं और आप प्रार्थना कर रहे हैं कि भगवान आपको माफ कर देंगे।

और इसलिए हमारे पास है, ये उनमें से कुछ हैं, मेरे सभी पापों को क्षमा करें, मेरी दुष्टता को मिटा दें। मुझे क्षमा कर दो, हे प्रभु, मुझे क्षमा कर दो। मेरे पापों से मुझे मत छीनो।

मुझसे सदैव नाराज़ मत रहना। मेरे दुष्ट कर्मों को बचा न रख। ये सब कन्फेशन हैं।

इसलिए, यदि आप पीड़ित हैं और आपको लगता है कि यह आपके पाप के लिए है, तो हम भगवान के पास आते हैं, हम उनसे इस विश्वास के साथ प्रार्थना करते हैं कि वह हमें माफ कर देंगे। और नए नियम में, हम सीखते हैं कि इसका आधार मसीह का प्रायश्चित्त है। अतः हम कभी पाप में नहीं रहते।

यदि परमेश्वर ने हमें क्षमा नहीं किया, तो हम क्षमा कर देंगे, हम पाप में फंस जाते। कोई मुक्ति नहीं होगी। यदि उड़ाऊ व्यक्ति के पास रहने के लिए घर नहीं है, तो उसके पास कोई आशा नहीं है।

लेकिन जब हम फिजूलखर्ची करते हैं तो हमारे पास हमेशा जाने के लिए एक घर होता है। सदा मोक्ष है। और यहीं पर ये प्रायश्चितात्मक भजन आते हैं जो आपके पास हैं।

लेकिन अन्य भजन भी हैं जो विरोध हैं। वे जानते हैं कि वे निर्दोष हैं। और वह दूसरा समूह है।

यहां आपके पास उनके कुछ शब्द हैं, मुझे परखें, जांचें, यह शाब्दिक है, मेरी किडनी और मेरा दिल। गुर्दे भावनाओं का स्थान हैं। मैं आपको यह पता लगाने दूँगा कि ऐसा क्यों है।

वह ईश्वरीय न्यायाधीश से मुझे दोषी ठहराने का आग्रह करता है। प्रार्थना करने वाला मुझसे विनती करता है कि मैं उसकी बेगुनाही को पहचानूं और उसे पापियों के भाग्य में गिरने के लिए न छोड़ूं। तो, ये विरोध स्तोत्र हैं।

और ये कठिन हैं क्योंकि कौन कह सकता है कि मैं निर्दोष हूँ? और हम सभी जानते हैं कि हम पापी हैं, लेकिन आप आत्मविश्वास के लिए अस्पष्टता में नहीं रह सकते। आपको यह जानना होगा कि या तो आपको माफ कर दिया गया है या आप निर्दोष हैं। और यदि तुम निर्दोष हो, तो प्रार्थना कर सकते हो, यह उचित है कि मैं बचा लिया जाऊँगा।

आप देखिए, जब तक आपको यह विश्वास नहीं है कि आप निर्दोष हैं, मुझे छुड़ाने के लिए प्रार्थना करना कठिन है, जिसका न्यायिक पहलू भी है क्योंकि यह सही है। अब दाऊद प्रार्थना करेगा, और कहेगा, मेरे छिपे हुए पापों को क्षमा कर। पॉल कहते हैं, मैं खुद का मूल्यांकन नहीं करता, लेकिन मैं जानता हूँ कि मेरे छिपे हुए पाप माफ कर दिए गए हैं।

और यदि मुझे किसी पाप का ज्ञान हो तो उसे अवश्य स्वीकार करना चाहिए। और फिर मुझे एक प्रायश्चित्त गीत की आवश्यकता है। लेकिन अगर मैं जानता हूँ कि मुझे कोई अपराधबोध नहीं है और मैं जानता हूँ कि मैं प्रभु के साथ चल रहा हूँ और मुझे अपने सभी पापों से शुद्ध करने के लिए उस पर भरोसा है, तो मैं कह सकता हूँ, मैं निर्दोष हूँ और भगवान वही करते हैं जो सही है मुझे इस स्थिति में।

तीसरी बात यह है कि वह ईश्वर से धर्म परिवर्तन और पाप से सुरक्षा के लिए प्रार्थना करता है। मैं इसे उसी के साथ जाने दूँगा। मैं अब याचिका अनुभाग छोड़ने जा रहा हूँ।

और हम पृष्ठ 156, विश्वास अनुभाग पर हैं। और इसलिए, आपके पास अभिव्यक्तियाँ हैं। विश्वास इस बात पर आधारित है कि ईश्वर कौन है, नंबर एक।

यह इस पर आधारित है कि परमेश्वर ने भजनहार के लिए क्या किया है। और जैसा कि मैंने कहा, यह पृष्ठ 157 है। भगवान का एक महान ट्रैक रिकॉर्ड है।

हम इसे तब देखेंगे जब हम भजन 22 पढ़ेंगे। पृष्ठ 158 पर, हमारे पास आत्मविश्वास के कारण हैं। यह सब समृद्ध सामग्री है।

यहाँ बहुत सारी सामग्री है, लेकिन विश्वास का कारण यह है कि ईश्वर कौन है। वह पवित्र है, धर्मी है, न्यायकारी है। और इसका कारण उसका अपना व्यक्तिगत अनुभव है, इस विश्वास के लिए कि भगवान ने उसे अतीत में बचाया है।

तीसरा, इसलिए विश्वास का पहला कारण ईश्वर का होना है। दूसरा उसका व्यक्तिगत अनुभव और ईश्वर ने क्या किया है। और मैं इसे इससे भी आगे बढ़ाऊंगा।

पेज 159 पर तीसरा, उसे आत्मविश्वास है क्योंकि वह जानता है कि वह कौन है। वह अपना चुनाव जानते हैं। वह जानता है कि वह राजा है।

तो आत्मविश्वास का पहला कारण, मैं जानता हूँ कि भगवान कौन है। मेरे आत्मविश्वास का दूसरा कारण यह है कि मैं जानता हूँ कि भगवान ने क्या किया है। मुझे ऐसा करना चाहिए था, मुझे लगता है कि इसे नोट्स से बेहतर किया जा सकता था, लेकिन अब मैं इसे ऐसे ही रखना चाहता हूँ।

मैं जानता हूँ कि भगवान ने क्या किया है, इतिहास में उनके महान कार्य, उनके शक्तिशाली कार्य। तीसरा, वह जानता है कि वह कौन है, कि उसे एक महिमा प्रदान की गई है। मुझमें आत्मविश्वास है क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कौन हूँ।

मैं भगवान के वादों के अनुसार भगवान का बच्चा हूँ। चौथा, वह जानता है कि ईश्वरविहीनों के पास 'आई एम' के साथ कोई जगह नहीं है। फिर वह निर्दोषता के औचित्य आदि पर चर्चा करता है।

मुझे उसे छोड़ना होगा। फिर हम निष्कर्ष के बारे में कुछ विचार करते हैं। निष्कर्ष के बारे में मैं यहां जो एकमात्र बिंदु कहना चाहता हूँ वह पृष्ठ 161 पर है।

यह है, इसलिए हमने पते पर गौर किया। हमने विलाप और उस सब को देखा। हमने याचिकाओं और उस सब पर गौर किया।

हमने आत्मविश्वास पर गौर किया और अब हम निष्कर्ष पर हैं। अक्सर, वे पूर्ण निश्चितता के साथ समाप्त होते हैं। भगवान ने उनकी प्रार्थना का जवाब दिया।

यही हम यहां उठा रहे हैं, पहले डेटा, और फिर डेटा के लिए स्पष्टीकरण। ये रहा डेटा. मुझे आपकी कृपा पर भरोसा है।

मैं अपने घर में हरे जैतून के पेड़ की तरह हूँ। मुझे हमेशा-हमेशा के लिए आई एम की कृपा पर भरोसा है। हे भगवान, आप धर्मी को मोक्ष का आशीर्वाद देते हैं और ढाल की तरह उसकी रक्षा करते हैं।

आप उसे अनुग्रह का ताज पहनाएं। यहोवा मेरी ढाल है जो मेरी रक्षा करता है। सच्चे हृदय की सहायता से प्रभु धर्मी का न्याय करते हैं और प्रतिदिन शाप देने वाले को बदला देते हैं, इत्यादि।

अंततः वे उनमें से कई पर पूर्ण विश्वास के साथ समाप्त होते हैं, सभी पर नहीं, बल्कि उनमें से कई पर। भजन 4, वह पूरी तरह आश्वस्त होकर सो गया। इस परिवर्तन का स्पष्टीकरण क्या है? कुछ

लोग कहते हैं कि एक पुरोहिती दैवज्ञ था, जैसे कि हन्ना के मामले में, एक पुरोहित ने कहा, भगवान ने आपकी प्रार्थना का उत्तर दिया है।

इसी बात ने उन्हें उस प्रकार का आत्मविश्वास दिया। यह एक स्पष्टीकरण है। मैं उसे नहीं खरीदता क्योंकि मुझे लगता है कि पाठ में इसका संकेत दिया गया होगा।

इसका कोई संकेत नहीं है। इसलिए, मैं स्पष्टीकरण के लिए हन्ना के पास वापस नहीं जाता। मुझे लगता है कि यह विश्वास का मनोविज्ञान है कि वे अपने दिल में आश्वस्त हैं।

मुझे लगता है कि यह आस्था का मनोविज्ञान है। मुझे लगता है गुंकेल यहीं है। प्रार्थना में ही, एक अद्भुत कायापलट अनजाने में और अनजाने में, अक्सर अचानक ही पूरा हो जाता है।

सुरक्षा की सुखद जागरूकता और एक सुरक्षात्मक उच्च शक्ति के हाथ में छुपे रहने से अनिश्चितता और आरक्षण की भावना खत्म हो जाती है। वह गंकेल है। संदेह और पूछताछ से निश्चितता टूटती है।

डर से आत्मविश्वास आता है और चिंता और डरपोकपन से भविष्य में खुश होने का साहस आता है। इच्छाएँ और अभिलाषाएँ आंतरिक संपत्ति और परिसम्पत्ति बन जाती हैं। इस अनुभव से, लूथर मेलानकथॉन को लिखते हैं, मैंने आपके लिए प्रार्थना की है।

मैंने अपने दिल में आमीन महसूस किया है। इस अनुभव से, केल्विन ने आशंकाओं, भय और डगमगाहट के बीच प्रार्थना का नियम तैयार किया। हमें खुद को तब तक प्रार्थना करने के लिए मजबूर करना चाहिए जब तक हमें रोशनी न मिल जाए, जो हमें शांत कर देती है।

यदि हमारे दिल डगमगाते और परेशान हैं, तो हम तब तक हार नहीं मान सकते जब तक कि विश्वास युद्ध से विजयी न हो जाए। मैं पूरी तरह सहमत नहीं हूँ। मेरा मानना है कि हमें आत्मविश्वास के लिए प्रार्थना करनी चाहिए और हम आत्मविश्वास के साथ समाप्त होते हैं, लेकिन सभी भजन इस तरह समाप्त नहीं होते हैं।

मेरी समस्या यही है। लेकिन सभी भजन सुने जाने की निश्चितता के साथ समाप्त नहीं होते। शायद मुझे इस बारे में दोबारा सोचना चाहिए।

मैं यह बहुत अच्छा नहीं कह रहा हूँ। मुझे नहीं लगता कि हमें तब तक प्रार्थना करने के लिए बाध्य होना चाहिए जब तक हमें वह निश्चितता प्राप्त न हो जाए। मैं इसे सभी भजनों में चलता हुआ नहीं देखता हूँ।

यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसके बारे में मुझे और अधिक सोचने की आवश्यकता है। मैं यहां जो कह रहा हूँ उसके बारे में और अधिक सोचना चाहता हूँ। मैं थोड़ा सा हूँ।

पुरुष होने के बारे में यह अच्छी बात है। इसलिए, कानून की अदालत की तरह, उसकी बात मत सुनो, कानून की अदालत की तरह, उसकी बात मत सुनो। उसे अपने फैसले से हटा दें।

इसलिए, जब मैं यह कह रहा हूँ, तो मैं जो कह रहा हूँ उसमें सहज महसूस नहीं कर रहा हूँ। कुछ गलत है। इसलिए, मैं जो कह रहा हूँ उस पर मुझे भरोसा नहीं है।

यह भजन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. ब्रूस वाल्टके हैं। यह सत्र संख्या 12 है, याचिका स्तोत्र, विलाप, शत्रु और रूपांकन।